सुविचार- अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कहानी

माँ का प्यार

चिड़िया की ममता की कहानी में एक चिड़िया अपने चार बच्चों– चुनमुन, गुनगुन, फुरफुर और टुनटुन–के लिए बारिश में खाना लाने की हिम्मत करती है. तेज बारिश के बावजूद वह किसान के आँगन से अनाज लाकर अपने बच्चों की भूख मिटाती है. यह कहानी माँ की ममता और बलिदान को दर्शाती है.

एक हरे-भरे जंगल में, एक ऊँचे नीम के पेड़ पर चिड़िया ने अपना छोटा सा घोंसला बनाया था. उस घोंसले में उसके चार नन्हे-मुन्ने बच्चे रहते थे– चुनमुन, गुनगुन, फुरफुर और टुनटुन. चिड़िया के बच्चे अभी बहुत छोटे थे और उड़ना नहीं जानते थे. हर दिन चिड़िया उनके लिए जंगल से कीड़े, दाने और फल लाकर उन्हें प्यार से खिलाती थी. वह अपने बच्चों से कहती, मेरे प्यारे बच्चों, तुम चिंता मत करो. माँ हूँ ना, मैं तुम्हें कभी भूखा नहीं रहने दूँगी. बच्चे उसकी बात सुनकर खुश हो जाते और चहचहाने लगते.

एक दिन जंगल में बहुत तेज बारिश होने लगी. काले बादल गरज रहे थे और बिजली चमक रही थी. चिड़िया अपने घोंसले में बच्चों के साथ बैठी थी. तभी उसके नन्हे बच्चों को जोर-जोर से भूख लगने लगी. चुनमुन ने कहा, माँ, मुझे बहुत भूख लगी है. कुछ खाने को लाओ ना. गुनगुन ने भी रोते हुए कहा, हाँ माँ, मेरा पेट दुख रहा है. फुरफुर और टुनटुन भी चीं-चीं करके रोने लगे.चिड़िया अपने बच्चों का रोना देखकर परेशान हो गई. उसने उन्हें प्यार से चुप कराने की कोशिश की. वह बोली, बस मेरे लाडलों, थोड़ा सब्र करो. माँ अभी कुछ लेकर आती है. लेकिन बच्चे भूख से तड़प रहे थे, और चुप होने का नाम ही नहीं ले रहे थे.

चिड़िया सोच में पड़ गई. उसने सोचा, इतनी तेज बारिश में खाना कहाँ से लाऊँ? लेकिन अगर खाना नहीं लाई, तो मेरे बच्चे भूखे रह जाएँगे.चिड़िया ने हिम्मत जुटाई. उसने अपने बच्चों को देखा और कहा, तुम लोग घोंसले में ही रहना, माँ अभी आई. फिर उसने अपनी जान की परवाह न करते हुए बारिश में उड़ान भर दी.

बारिश इतनी तेज थी कि चिड़िया के पंख पूरी तरह भीग गए. वह बिजली की चमक से डर रही थी, लेकिन बच्चों की भूख उसके डर से बड़ी थी.चिड़िया जंगल के पास एक गाँव में पहुँची. वहाँ एक किसान के घर के आँगन में कुछ अनाज और फल बिखरे पड़े थे. किसान शायद जल्दबाजी में उन्हें उठाना भूल गया था.

चिड़िया ने जल्दी से अपनी छोटी सी चोंच में जितने दाने समा सकते थे, उतने अनाज भर लिए. उसने कुछ छोटे-छोटे फल भी उठाए और तेजी से अपने घोंसले की ओर उड़ चली.घोंसले में पहुँचते ही चिड़िया ने अपने बच्चों को अनाज और फल खिलाए. चुनमुन ने खुश होकर कहा, माँ, ये दाने बहुत स्वादिष्ट हैं! गुनगुन ने चहकते हुए कहा, माँ, तुम सबसे अच्छी हो! फुरफुर और टुनटुन ने भी खाना खाकर अपनी माँ को प्यार से देखा. बच्चों का पेट भर गया और वे चुप हो गए. अब वे आपस में खेलने लगे. चिड़िया ने राहत की साँस ली और सोचा, मेरे बच्चों की भूख मिट गई, बस यही मेरी सबसे बड़ी खुशी है.

उस दिन चिड़िया को एक बात समझ आई. उसने सोचा, मेरे बच्चों को भूख लगी तो वे रोने लगे. लेकिन मैं तो हूँ उनके लिए. अगर मुझे भूख लगे, तो मैं भी अपनी माँ को याद करती हूँ. माँ की ममता इस दुनिया में सबसे अनमोल है. उसने अपने बच्चों से कहा, मेरे प्यारों, माँ हमेशा तुम्हारा ध्यान रखेगी. तुम बस खुश रहो. बच्चों ने चहचहाकर अपनी माँ को धन्यवाद दिया.

सीख

बच्चों, इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि माँ की ममता इस दुनिया में सबसे बड़ी है. चिड़िया ने अपनी जान जोखिम में डालकर भी अपने बच्चों की भूख मिटाई. हमें अपनी माँ की कद्र करनी चाहिए और उनके प्यार को समझना चाहिए, क्योंकि माँ हमेशा हमारी भलाई के लिए सोचती है.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

उत्तर- सूर्य की किरणें, 2. लड़की के हाथ की आइसक्रीम का कलर, 3. लड़के के सामने रखे गिलास के शर्बत में अंतर 4. टोकरी में रखे फलों में अंतर, 5. नीचे रखे फल में एक आम गायब

दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रभावित थे बिस्मिल

राम प्रसाद बिस्मिल का जन्म 11 जून 1897 को उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर जिले में एक तोमर राजपूत परिवार में हुआ था. उनके पिता मुरलीधर नगर पालिका में काम करते थे और बाद में उन्होंने छोटा-सा कर्ज देने का व्यवसाय शुरू किया. उनकी माता मूलमती एक धार्मिक और प्रभावशाली महिला थीं. राम प्रसाद ने अपने पिता से हिंदी और एक स्थानीय मौलवी से उर्दू सीखी. बचपन से ही वे आर्य समाज से जुड़े थे. स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रभावित थे.

राम प्रसाद बिस्मिल ने कम उम्र में ही ब्रिटिश शासन के खिलाफ क्रांतिकारी गतिविधियों में हिस्सा लेना शुरू कर दिया. 1918 में उन्होंने मैनपुरी षड्यंत्र में भाग लिया, जिसमें उन्होंने और उनके साथियों ने सरकारी खजाने को लूटने की योजना बनाई. इस दौरान उन्होंने देशवासियों के नाम नामक एक पर्चा और मैनपुरी की प्रतिज्ञा कविता लिखकर लोगों में आजादी की भावना जगाई.

क्रांतिकारी संगठनों से जुड़ाव- मातृवेदी और शिवाजी समिति- बिस्मिल ने अपने साथी गेंदा लाल दीक्षित के साथ मिलकर एटा, मैनपुरी, आगरा और शाहजहाँपुर के युवाओं को संगठित किया. 1924 में उन्होंने सचिंद्र नाथ सान्याल और जदुगोपाल मुखर्जी के साथ मिलकर ।।क्र की स्थापना की. इस संगठन में चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह और अशफाक उल्ला खान जैसे क्रांतिकारी भी शामिल थे.

काकोरी कांड- एक ऐतिहासिक घटना - राम प्रसाद बिस्मिल का नाम सबसे ज्यादा काकोरी कांड से जुड़ा है. 9 अगस्त 1925 को, बिस्मिल और उनके साथियों ने काकोरी (लखनऊ के पास) में 8-डाउन सहारनपुर-लखनऊ पैसेंजर ट्रेन को रोककर सरकारी खजाने को लूट लिया. इस योजना में अशफाक उल्ला खान, राजेंद्र लाहिड़ी और अन्य क्रांतिकारियों ने भी हिस्सा लिया. लेकिन इस दौरान एक यात्री की दुर्घटनावश मौत हो गई, जिसके बाद ब्रिटिश सरकार ने क्रांतिकारियों पर सख्त कार्रवाई की.

साहित्यिक योगदान- राम प्रसाद बिस्मिल न केवल एक क्रांतिकारी थे, बल्कि एक प्रतिभाशाली कवि और लेखक भी थे. उन्होंने हिंदी और उर्दू में बिस्मिल, राम, और अज्ञात जैसे छद्म नामों से रचनाएँ लिखीं. उनकी कविताएँ देशभक्ति और बलिदान की भावना से भरी हुई हैं.

प्रमुख रचनाएँ- सरफरोशी की तमन्ना- यह कविता, हालांकि बिस्मिल अजीमाबादी द्वारा लिखी गई थी, राम प्रसाद बिस्मिल के बलिदान से जुड़कर क्रांतिकारियों का प्रेरणा स्रोत बन गई.

पंक्तियाँ- सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है ज़ोर कितना बाज़ू-ए-कातिल में है.

मणि की लहर- देशभक्ति से भरी कविताओं का संग्रह.

स्वदेशी रंग- भारत के प्रति उनके प्रेम को दर्शाने वाली रचनाएँ.

क्रांति गीतांजलि- क्रांतिकारी भावनाओं को जगाने वाली कविताएँ.

स्वाधीनता की देवी- कैथरीन- एक अंग्रेजी किताब का हिंदी अनुवाद.

रोचक तथ्य

जानें दिल्ली के इतिहास के बारे में

दिल्ली, भारत की राजधानी, न सिर्फ एक शहर है बल्कि इतिहास का एक जीवंत दस्तावेज भी है. यहाँ की गलियों, स्मारकों और बाजारों में सैकड़ों सालों का इतिहास बसा है. दिल्ली ने कई साम्राज्यों का उदय और पतन देखा है– तोमर राजपूतों से लेकर मुगलों और अंग्रेजों तक. आइए, दिल्ली के इतिहास से जुड़े कुछ रोचक तथ्यों पर नजर डालें, जो आपको हैरान कर देंगे.

दिल्ली का प्राचीन नाम- इंद्रप्रस्थ- दिल्ली का इतिहास महाभारत काल तक जाता है. माना जाता है कि दिल्ली को पहले इंद्रप्रस्थ के नाम से जाना जाता था, जो पांडवों की राजधानी थी. पुराना किला क्षेत्र को इंद्रप्रस्थ का स्थान माना जाता है, हालांकि इसकी पुष्टि के लिए पुरातात्विक साक्ष्य सीमित हैं. फिर भी, यह किवदंती दिल्ली को एक पौराणिक महत्व देती है.

सात बार बनी दिल्ली- दिल्ली को सात शहरों की दिल्ली कहा जाता है, क्योंकि यह कई बार बनी, बर्बाद हुई और फिर से बसाई गई. इतिहासकारों के अनुसार, 3000 ईसा पूर्व से 17वीं सदी तक दिल्ली ने अपने स्थान को सात बार बदला. कुछ विद्वान छोटे कस्बों और किलों को मिलाकर यह संख्या 15 तक मानते हैं. इनमें लालकोट, सिरि, तुगलकाबाद, फिरोजाबाद और शाहजहानाबाद जैसे शहर शामिल हैं.

तोमर राजपूतों ने की स्थापना- दिल्ली की नींव 8वीं सदी में तोमर राजपूतों ने रखी थी. राजा अनंगपाल तोमर ने इसे डिल्लिका के रूप में विकसित किया. बाद में चौहान, मुगल और पठानों ने यहाँ शासन किया. तोमरों का योगदान दिल्ली के इतिहास में महत्वपूर्ण माना जाता है.

कुतुब मीनार- दुनिया की सबसे ऊँची ईंट मीनार- कुतुब मीनार, जिसकी नींव 1200 ईस्वी में कुतुब-उद-दीन ऐबक ने रखी, दुनिया की सबसे ऊँची ईंट मीनार है. यह यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है और दिल्ली सल्तनत की जीत का प्रतीक है. मीनार की नक्काशी और वास्तुकला आज भी देखने लायक है.

लाल किला पहले था सफेद- मुगल सम्राट शाहजहाँ ने 1639 में लाल किला बनवाया, जो आज दिल्ली का एक प्रमुख स्मारक है. लेकिन क्या आप जानते हैं कि यह पहले सफेद रंग का था? पुरातत्व सर्वेक्षण के अनुसार, लाल किला चूना पत्थर से बना था. जब चूना पत्थर छिलने लगा, तो अंग्रेजों ने इसे लाल रंग से रंग दिया.

1911 में बनी भारत की राजधानी- दिल्ली हमेशा से भारत की राजधानी नहीं थी. ब्रिटिश शासन के दौरान कोलकाता राजधानी थी. लेकिन 1911 में ब्रिटिश सम्राट जॉर्ज पंचम ने दिल्ली को नई राजधानी घोषित किया. नई दिल्ली को ब्रिटिश वास्तुकार एडविन लुटियंस और हर्बर्ट बेकर ने डिजाइन किया, जिसे आज लुटियंस दिल्ली भी कहते हैं.

खारी बावली- एशिया का सबसे बड़ा मसाला बाजार- पुरानी दिल्ली में स्थित खारी बावली बाजार 17वीं सदी से सक्रिय है और यह एशिया का सबसे बड़ा थोक मसाला बाजार है. यहाँ मसाले, सूखे मेवे, चाय जैसी चीजें बिकती हैं. इसकी खुशबू पर्यटकों को अपनी ओर खींचते हैं.

दिल्ली की दीवारें और 14 दरवाजे- मध्यकाल में दिल्ली एक दीवारों से घिरा शहर था, जिसे शाहजहानाबाद कहा जाता था. इसकी सुरक्षा के लिए 14 दरवाजे बनाए गए थे, जिनमें से आज सिर्फ 5 बचे हैं–कश्मीरी गेट, अजमेरी गेट, लाहौरी गेट, दिल्ली गेट और तुर्कमान गेट. ये दरवाजे दिल्ली के ऐतिहासिक अतीत की याद दिलाते हैं.

सुलभ इंटरनेशनल म्यूजियम ऑफ टॉयलेट्स- दिल्ली में एक अनोखा संग्रहालय है–सुलभ इंटरनेशनल म्यूजियम ऑफ टॉयलेट्स. 1992 में डॉ. बिंदेश्वर पाठक द्वारा स्थापित यह म्यूजियम स्वच्छता और शौचालयों के इतिहास को प्रदर्शित करता है. यह संग्रहालय दुनिया भर में अपनी अनोखी थीम के लिए मशहूर है.

2010 कॉमनवेल्थ गेम्स- सबसे महंगा आयोजन - 2010 में दिल्ली में आयोजित कॉमनवेल्थ गेम्स अब तक का सबसे महंगा कॉमनवेल्थ आयोजन था. इसकी लागत को लेकर काफी विवाद भी हुआ, लेकिन इसने दिल्ली को वैश्विक मंच पर पहचान दिलाई.

भूल भुलैया

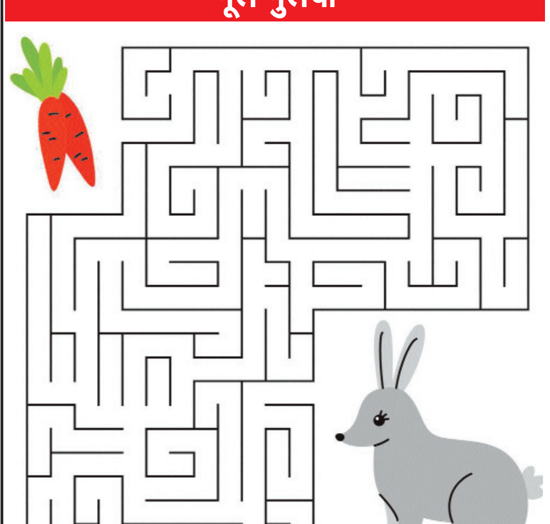

कविता

आकाश की सैर

नन्हे-मुन्ने बच्चों, सुनो एक बात,
आकाश है नीला, करता है मुलाकात.

सूरज चमकता, जैसे सुनहरा ताज,
चाँद दिखे रात में, करता है राज.
तारे टिमटिमाते, जैसे छोटे दीप,
आकाश में उड़ते, बादल हैं सजीव.

कभी बनते गोल, कभी बनते हाथी,
बच्चों को दिखाते, अपने साथी.

पंछी चहकते, उड़ते हैं आज़ाद,
आकाश की सैर में, उनका है स्वाद.

हवा के झोंके, गाते हैं गीत,
आकाश है सुंदर, इसमें है प्रीत.

कभी बरसता पानी, बूँदों की फुहार,
आकाश से आती, खुशियों की बहार.

इंद्रधनुष बनता, सात रंगों का मेल,
बच्चे देखकर करते, खुशी का खेल.

बूझो तो जानें

- पैर नहीं है, पर चलती रहती, दोनों हाथों से अपना मुँह पोंछती रहती.

  जवाब- घड़ी

- हरी थी मन भरी थी, लाख मोती जड़े थी, राजाजी के बाग में दुशाला ओढ़े खड़ी थी?

  जवाब- भुट्टा

- सुबह-सुबह ही आता हूँ, दुनिया की खबर सुनाता हूँ, बिन मेरे उदास हो जाते, सबका प्यारा रहता हूँ.

  जवाब- अखबार

- वह क्या है जिसे इस्तेमाल करने से पहले तोड़ना पड़ता है?

  जवाब- अंडा

- साल के किस महीने में 28 दिन होते हैं?

  जवाब- साल के सभी महीनों में 28 दिन होते हैं.

- काला रंग मेरी शान, सबको मैं देता हूँ ज्ञान, शिक्षक करते मुझे पर काम, नाम बताकर बनो महान.

  जवाब- ब्लैकबोर्ड

हंसी-ठिठोली

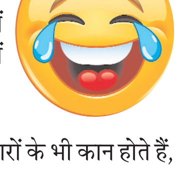

- संता बंता आपस में बात कर रहे थे...
  संता- एक लॉजिक मैं आज तक समझ नहीं पाया,
  बंता- क्या?
  संता- धीरे बोलो दीवारों के भी कान होते हैं, मान लो
  कान होते भी हैं तो जुबान तो नहीं होती ना, सुन भी लिया तो किसी को कैसे बताएंगे?
- टीचर- अगर कोई स्कूल के सामने बम रख जाए, तो तुम क्या करोगे?
  छात्र- एक-दो घंटे देखेंगे, अगर कोई ले जाता है, तो ठीक है.
  वरना स्टाफ रूम में रख देंगे.
- पिता- बेटा आज तक तूने कोई ऐसा काम किया है, जिससे मेरा सर ऊंचा हो?
  बेटा- जी हां पापा एक बार आपके सर के नीचे तकिया रखा था.
  पिता जवाब सुन कर अब तक हैरान है.

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**

बिंदु मिलाओ

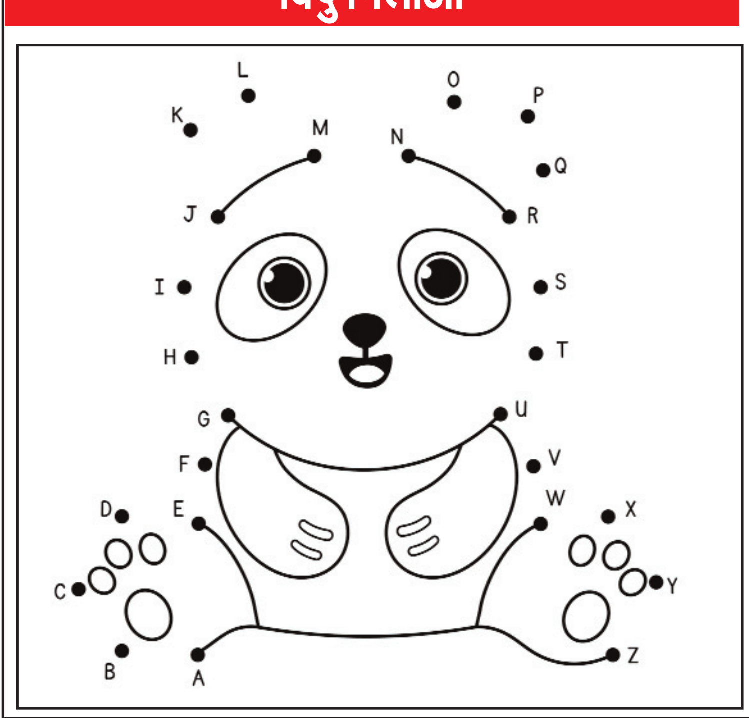
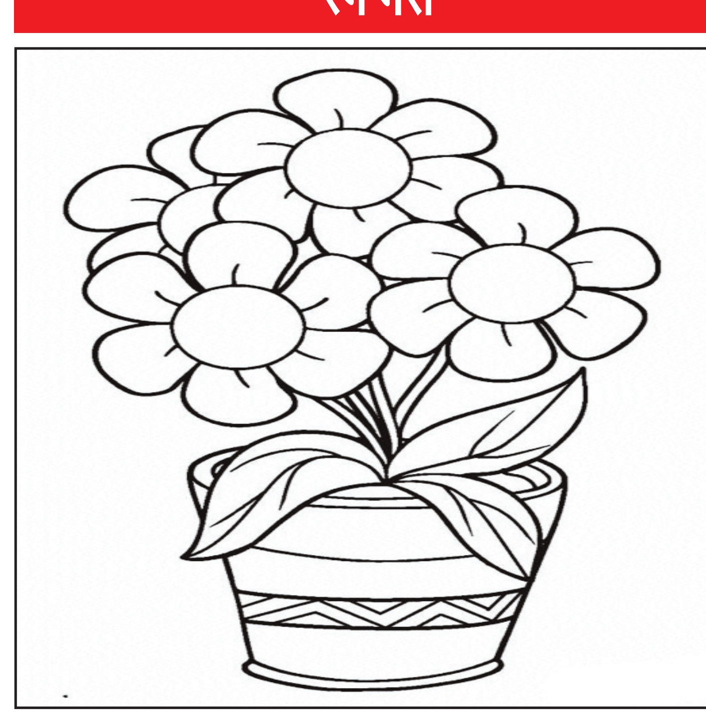
रंग भरो